



NEERAJ®

हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल

B.H.D.L.A.-137

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A., B.Ed.



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल

Question Paper—June-2024 (Solved)	1
Question Paper—December-2023 (Solved)	1
Question Paper—June-2023 (Solved)	1
Question Paper—December-2022 (Solved)	1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-3

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	संप्रेषण के मूल तत्व	1
2.	उच्चरित और लिखित भाषा : संप्रेषण के तत्व	13
3.	आंगिक भाषा और संप्रेषण	28
4.	संप्रेषण के विविध रूप	38
5.	भाषिक कला के विभिन्न पक्ष	49
6.	संवाद कला के विभिन्न पक्ष	57
7.	पत्र लेखन (औपचारिक)	69
8.	संचार के लिए लेखन	84
9.	कार्यालयी लेखन (रिपोर्ट और कार्यवृत्त)	95

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
10.	सर्जनात्मक लेखन की भाषा	105
11.	वैयक्तिक लेखन की भाषा	120
12.	भाषण के लिए लेखन	133



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल

B.H.D.L.A.-137

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी भागों से निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

भाग - क

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. संप्रेषण के अर्थ को समझाते हुए संप्रेषण की प्रक्रिया का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'संप्रेषण का अर्थ', पृष्ठ-2, 'संप्रेषण की प्रक्रिया'

प्रश्न 2. उच्चरित और लिखित भाषा की विशेषताओं को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-14, 'उच्चरित और लिखित भाषा की विशेषताएँ'

प्रश्न 3. मुद्रित माध्यमों की भाषा को उदाहरण देकर लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-87, 'मुद्रित माध्यमों की भाषा'

भाग - ख

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 4. आंगिक भाषा को स्पष्ट करते हुए उसके विभिन्न रूपों पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-36, प्रश्न 14

प्रश्न 5. रिपोर्ट (प्रतिवेदन) को परिभाषित करते हुए उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9 पृष्ठ-102, प्रश्न 7

प्रश्न 6. सर्जनात्मक लेखन की विशिष्टताओं का विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-105, 'सर्जनात्मक लेखन की विशिष्टता'

प्रश्न 7. वैयक्तिक लेखन के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए उसकी विभिन्न विधाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-128, प्रश्न 8, प्रश्न 10

भाग - ग

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 8. भाषण की भाषा के मुख्य बिन्दुओं को लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-134, 'भाषण की भाषा और उसका लेखन'

प्रश्न 9. समाचार लेखन के महत्त्वपूर्ण बिन्दु कौन-कौन से हैं? अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-135, 'समाचार की भाषा और उसका लेखन'

प्रश्न 10. जनसंचार माध्यमों के स्वरूप पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-84, 'जनसंचार माध्यमों का स्वरूप'

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल

B.H.D.L.A.-137

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी भागों से निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

भाग-क

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. सफल संप्रेषण को विस्तार से समझाइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'सफल संप्रेषण'

प्रश्न 2. उच्चरित और लिखित भाषा में भेद बताइए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-21, प्रश्न 6

प्रश्न 3. भाषा के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'परिचय', 'उच्चरित भाषा की प्रकृति', 'लिखित भाषा की प्रकृति', पृष्ठ-22, प्रश्न 7

भाग-ख

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 4. संप्रेषण के विविध रूपों का परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'संप्रेषण के विविध रूप'

प्रश्न 5. संवाद की संरचना को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-57, 'संवाद की संरचना', पृष्ठ-59, प्रश्न 3

प्रश्न 6. जनसंचार माध्यमों के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-84, 'जनसंचार माध्यमों का स्वरूप'

प्रश्न 7. श्रव्य माध्यमों की भाषा पर विचार कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-87, 'श्रव्य माध्यमों की भाषा'

भाग-ग

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 8. प्रतिवेदन के प्रकारों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-96, 'प्रतिवेदन के प्रकार'

प्रश्न 9. सर्जनात्मक लेखन की विशिष्टता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-105, 'सर्जनात्मक लेखन की विशिष्टता'

प्रश्न 10. वैयक्तिक लेखन की विभिन्न विधाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-121, 'वैयक्तिक लेखन की विभिन्न विधाएं'



Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल



संप्रेषण के मूल तत्व

परिचय

संप्रेषण परस्पर विचारों एवं संदेशों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। संप्रेषण बोलकर, लिखकर, शारीरिक हाव-भाव आदि के द्वारा संपन्न होता है। जन-जन तक संप्रेषण हेतु संचार माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। संप्रेषण मानव समाज की आवश्यकता है। मनुष्य के पास भाषा है और वह अन्य प्राणियों से भाषा के माध्यम से समाज से जुड़ता है। संप्रेषण के जरिए ही व्यक्तिगत जरूरत से लेकर मनोरंजन तक की तमाम जरूरतें पूरी होती हैं। इसे हम संप्रेषण का प्रयोजन कह सकते हैं। अच्छा संप्रेषक बनने के लिए आवश्यक है कि संप्रेषण की प्रक्रिया और संप्रेषण में आने वाली बाधाओं की जानकारी भी प्राप्त की जाए। संप्रेषण एक कला है, जो इसमें जितना ही कुशल होगा, उसे जिंदगी में उतनी ही ज्यादा सफलता मिलेगी।

अध्याय का विहंगावलोकन

संप्रेषण का अर्थ

संप्रेषण की परिभाषा इस तरह की जा सकती है कि यह दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच तथ्यों, विचारों, सोच और सूचना का मौखिक लिखित या संकेतों अथवा मुद्राओं के माध्यम से आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। संप्रेषण की प्रक्रिया में संदेश का होना आवश्यक है, जिसमें संदेश एक पक्ष से दूसरे पक्ष तक पहुंचाया जाता है। इस प्रक्रिया में दो पक्ष होते हैं—प्रेषक और प्राप्तकर्ता। संदेश भेजने वाले को प्रेषक कहते हैं और संदेश प्राप्त करने वाले प्राप्तकर्ता कहते हैं। आमतौर पर संप्रेषण को उस समय पूरा समझा जाता है, जब प्राप्तकर्ता संदेश को समझ लेता है और फिर उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है या उसका जवाब देता है। सड़क के चौराहों पर लाल बत्ती देख कर रुक जाना लाल बत्ती देखने की प्रतिक्रिया है। यह प्रतिक्रिया किसी भी रूप में हो सकती है। आप अपने दोस्त से बात करते समय सिर हिलाते हैं, तो इसे भी प्रत्युत्तर समझा जाता है। इस प्रकार संदेश, प्रेषक

और प्राप्तकर्ता की तरह प्रत्युत्तर भी संप्रेषण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण तत्व है।

संप्रेषण के विविध रूप

मौखिक संप्रेषण

संप्रेषण अधिकतर बोलकर किया जाता है। इसका मूल आधार और माध्यम भाषा है। बोलना भी एक कला है। बड़े बुजुर्ग कहते हैं—सोच समझकर बोलो और ऐसा बोलो कि सुनने वाले प्रसन्न हो जाए। मौखिक संप्रेषण एक ऐसा संप्रेषण होता है, जिसमें हम मौखिक रूप से सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं। इस बीच में संदेश भेजने वाला तथा संदेश ग्रहण करने वाला दोनों ही आमने-सामने होते हैं। इसमें टेलीफोन, टीवी आदि के द्वारा पाठ के साक्षात्कार पर चर्चा, परिचर्चा, कहानी आदि के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति की जाती है। यह अनौपचारिक होता है।

आंगिक संप्रेषण

अशाब्दिक संप्रेषण के अंतर्गत वाणी से, आंखों से किया जाता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित संप्रेषण आते हैं—

वाणी या ध्वनि संकेत संप्रेषण—इसमें विचारों-भावनाओं की अभिव्यक्ति छोटे-छोटे समूह में आमने-सामने रहकर वाणी द्वारा रखी जाती है। जैसे कि वार्ता के बीच में हाँ, हाँ या हूँ, मुँह से सीटी बजाना आदि।

स्पर्श करके—स्पर्श के माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं एवं विचारों को अभिव्यक्त करने में सफल हो जाता है। हाथ मिलते हैं तो पता चल जाता है कि दोस्ती का हाथ है या दुश्मनी का अर्थात् स्पर्श का हाथ प्यार का द्योतक होता है।

लिखित संप्रेषण

लिखित संप्रेषण में व्यक्ति लिखकर संदेश भेजता है। संदेश भेजने वाला तथा प्राप्त करने वाला दोनों के पास लिखित रूप में रहता है और खर्च भी कम होता है। लिखित संप्रेषण में पत्र व्यवहार, बुलेटिन, गृह पत्रिकाएं, प्रतिवेदन आदि आते हैं।

किसी भी प्रकार का लेखन करने के लिए पाँच बातों का ध्यान रखना चाहिए—क्या, क्यों, कौन, कब और कैसे।

2 / NEERAJ : हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल

(1) **क्या**—इसके अंतर्गत लिखते समय सबसे पहले विषय का निर्धारण करना आता है। पत्र, रिपोर्ट, टिप्पण, लेख, कहानी कुछ भी लिखने से पहले यह तय कर लेना चाहिए कि लिखना क्या है।

(2) **क्यों**—विषय के निर्धारण के बाद लेखन का उद्देश्य तय करना चाहिए। इसमें निम्नलिखित पक्ष शामिल हो सकते हैं—सूचित करना, निवेदन करना, पुष्टिकरण करना, समझना आदि।

(3) **कौन**—इसके अंतर्गत संदेश प्राप्तकर्ता आता है। प्राप्तकर्ता के बारे में स्पष्ट जानकारी होने से संदेश स्पष्ट होगा। लिखने की शैली भी प्राप्तकर्ता के अनुसार भिन्न हो जाती है। यदि आप अपनी माँ के पास पत्र लिख रहे हैं, तो उसकी शैली अलग होगी। यदि आप किसी अधिकारी को पत्र लिख रहे हैं, तो उसकी शैली बिल्कुल भिन्न होगी।

(4) **कब**—इसके अंतर्गत संदेश लेखन का दिन और तारीख शामिल किए जाते हैं। खासकर पत्र लेखन में या कार्यालय का काम करते वक्त इसका अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

(5) **कैसे**—इसके अंतर्गत सन्देश लेखन की शैली आती है। आपकी भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए। यहाँ आपकी भाषा की पकड़ और लेखन-कौशल की परीक्षा होती है। तात्पर्य यह है कि आप कैसे लिख रहे हैं और क्या लिख रहे हैं, इसके अनुसार आपकी भाषा निर्धारित होनी चाहिए।

संचार माध्यम

संचार माध्यम संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। इनमें रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, फिल्म, वीडियो, समाचार-पत्र, होर्डिंग, बिल, पैंफलेट, इंटरनेट आदि श्रव्य, दृश्य एवं श्रव्य-दृश्य माध्यम आते हैं। सड़क के किनारे लगे बड़ी-बड़ी कंपनियों के होर्डिंग, समाचार पत्रों में छपे विज्ञापन, खतरे संबंधी सूचनाएँ, यातायात संकेत, टेलीफोन पर होने वाली बातचीत आदि भी संप्रेषण के रूप हैं।

संप्रेषण का प्रयोजन

संप्रेषण के प्रयोजन को निम्नलिखित रूपों में समझा जा सकता है—

व्यक्तिगत जरूरत

प्रत्येक व्यक्ति दिन भर में अपनी विभिन्न आवश्यकताओं के कारण अलग-अलग लोगों से सम्प्रेषण करता है। लोग काम करने, खाने, पीने, रहने, प्यार और जीवन से जुड़े सभी व्यक्तिगत पहलुओं के लिए संप्रेषण करते हैं।

व्यक्तिगत संबंध

किसी रिश्तेदार, मित्र या परिचित से मिलने पर व्यक्तिगत संबंध के अनुसार लोग अपनी आँख, हाथ, शब्द और भाव-भंगिमा से भी दूसरों से संबंध बनाने का प्रयास करते हैं।

सूचना

सूचना संग्रहण का काम बचपन से ही शुरू होता है और यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है। जनसंचार माध्यमों के विकास से तीव्रता से सूचना क्षण भर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना संभव हो गया है।

आपस में बातचीत

संप्रेषण अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने और दूसरे के विचार सुनने के लिए भी किया जाता है। 'गप्प' संप्रेषण का एक मजेदार और मनोरंजक उदाहरण है। इसके द्वारा एक-दूसरे की भावनाओं, विचारों, दृष्टिकोणों को जानने-समझने का प्रयास करना सबसे सरल उपाय है।

आग्रह

इस संप्रेषण का सबसे अच्छा उदाहरण विज्ञापन है। विज्ञापन बनाने का उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा लोगों तक विचार पहुँचाना होता है। रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र में शैंपू, टूथपेस्ट, साबुन, डिटर्जेंट पाउडर आदि के विज्ञापन में ग्राहकों से उत्पाद के बारे में बताकर उनसे उत्पाद खरीदने का आग्रह किया जाता है। उसे अलग-अलग ढंग से लुभाने का प्रयास किया जाता है। संप्रेषण के इस तरीके में ग्राहक की आकांक्षा, इच्छा, लोभ और अन्य व्यक्तिगत कमजोरियों का लाभ उठाया जाता है।

मनोरंजन

हँसना, हँसाना, दूसरे के दुःख-सुख में हिस्सा लेना मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। मनोरंजन से जीवन में तनाव कम हो जाता है। मनोरंजन के लिए लोग सिनेमा देखते हैं, टेलीविजन देखते हैं, घूमने-फिरने जाते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं।

संप्रेषण की प्रक्रिया

प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक संदेश पहुँचने की प्रक्रिया को ही संप्रेषण कहते हैं। संप्रेषण के तीन भाग होते हैं—प्रेषक, संदेश, प्राप्तकर्ता। सन्देश भेजने वाला प्रेषक होता है, प्रेषक जो सन्देश भेजता है उसे पढ़ने वाला उसका प्राप्तकर्ता होता है। संप्रेषण प्रक्रिया में नौ तत्व प्रमुख रूप से शामिल होते हैं—

1. स्रोत
2. वक्तृत्व क्षमता
3. संदेश
4. माध्यम
5. प्राप्तकर्ता
6. संदेश प्राप्ति
7. प्रतिक्रिया
8. संदर्भ
9. जीवन मूल्य और दृष्टिकोण।

आइए, इनके बारे में जानें—

स्रोत

स्रोत से ही संदेश का जन्म होता है। यह स्रोत कोई भी हो सकता है। स्रोत अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए अपने अनुभव और भाषा ज्ञान का उपयोग करता है। वह शब्दों के रूप में अपने विचारों को प्रकट करता है। मौखिक संप्रेषण में स्रोत को वक्ता कहते हैं।

वक्तृत्व क्षमता

यह विचारों को भाषागत अभिव्यक्ति देने की कला है। वक्ता की भाषा विचारों को स्पष्टता से अभिव्यक्त कर पाने और श्रोता को उसका संदेश समझ सकने योग्य होनी चाहिए।

संदेश

वक्ता के विचारों की अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति ही संदेश है। यह संदेश लिखित या मौखिक हो सकता है और आंगिक भी हो सकता है। संदेशों का प्रसारण भाषा में शब्दों, वाक्यों, प्रतीकों, बिंबों आदि के माध्यम से होता है। किसी भाषा को बोलने और समझने के लिए भाषा के व्याकरण, मुहावरे और संस्कृति को समझना आवश्यक है। भाषा संदेश का आधार है। वस्तुतः भाषा के जरिए ही संदेश बनाए और समझे जाते हैं।

हाव-भाव, शारीरिक मुद्राओं और चेष्टाओं, आवाज के उतार-चढ़ाव, गति, परिवर्तन से भी अपनी भावनाओं को संप्रेषित करना संभव है। कहने का तात्पर्य कि हमारे संदेश कई बार आंगिक या गैर-शाब्दिक भी होते हैं। इसमें भाषा नहीं होती, परंतु अर्थ पूर्ण होता है।

वस्तुतः मौखिक और आंगिक अभिव्यक्ति एक-दूसरे में गुंथे होते हैं। उदाहरण के लिए 'जाओ' एक शब्द है, परंतु कहने के अंदाज से इसका अर्थ बदल जाता है। यह आदेश, अनुमति, क्रोध की अभिव्यक्ति अथवा स्नेह का भी, हड़बड़ी का बोधक अर्थात् कुछ भी हो सकता है। अतः संप्रेषक भाषा और वाणी में तालमेल रखकर ही संदेश को सही ढंग से संप्रेषित कर सकता है।

माध्यम

संदेश को प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक पहुँचाने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। मौखिक संप्रेषण का माध्यम हवा है। वक्ता द्वारा बोला हुआ संदेश श्रोता तक पहुँचता है। अब रेडियो तरंगों, सैटेलाइट आदि के माध्यम से संदेश को दूर-दूर तक भेजना संभव है। जनसंचार माध्यम, जैसे-टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट द्वारा इनका इस्तेमाल किया जाता है। लिखित संप्रेषण में लिपि माध्यम होती है, जिसे हम आँखों से ग्रहण करते हैं।

प्राप्तकर्ता

संदेश को प्राप्त करने वाले को श्रोता या प्राप्तकर्ता कहते हैं। मौखिक संप्रेषण में श्रोता ही प्राप्तकर्ता होता है। संदेश को दूसरे श्रोता भी सुनकर उससे प्रभावित हो सकते हैं। मान लीजिए किसी व्यक्ति को स्वस्थ रहने के नियमों के बारे में बताया जा रहा हो, तो संभव है कि उसे वहाँ उपस्थित दूसरे लोग भी सुन लें और उससे प्रभावित होकर उन नियमों का पालन कर स्वास्थ्य लाभ ले लें।

संदेश प्राप्ति

संदेश प्राप्ति का अर्थ है प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश को विचारों में ढालने की प्रक्रिया। अंग्रेजी में इसे Decoding कहा जाता है। सर्वोत्तम स्थिति वह होती है, जिसमें श्रोता वक्ता द्वारा भेजे गए संदेश को उसी तरह समझता है जिस तरह वक्ता कहना चाहता है। श्रोता एवं वक्ता की भूमिका बदलती रहती है। टेलीफोन पर बातचीत करते समय कभी आप वक्ता होते हैं और कभी श्रोता।

प्रतिक्रिया

वक्ता और श्रोता के बीच संवाद या आपसी बातचीत से ही संप्रेषण की प्रक्रिया पूरी होती है। श्रोता द्वारा वक्ता को भेजे गए संदेश को 'प्रतिक्रिया' या 'फीडबैक' कहते हैं। आमने-सामने के संप्रेषण में

यह प्रतिक्रिया तुरंत हो जाती है। परन्तु सन्देश दूर भेजने पर यह प्रतिक्रिया तत्काल नहीं हो पाती। आज टेलीकांफ्रेंसिंग, ई-मेल, इंटरनेट आदि जैसी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा अपनी प्रतिक्रिया तुरंत भेज पाना भी संभव हो गया है।

प्रतिक्रिया शाब्दिक अथवा गैर-शाब्दिक हो सकती है। श्रोता की आँखों या शारीरिक प्रतिक्रिया से भी प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है। प्रतिक्रिया सकारात्मक भी हो सकती है और नकारात्मक भी।

संदर्भ

संप्रेषण का संदर्भ शारीरिक, मनोवैज्ञानिक अथवा सांस्कृतिक हो सकता है। उदाहरण के लिए, खेलते समय गिर जाने और चोट लग जाने पर मुँह से दुःख भरे शब्द या ओह माँ! जैसी ध्वनि भी निकल सकती है और इस समय आप केवल अपने आपसे ही बात नहीं कर रहे होते हैं, बल्कि दूसरों तक भी संदेश पहुँचा रहे होते हैं। मित्र, सहकर्मी, पड़ोसी या संबंधी से बात करते हुए संदेश का स्वरूप एक-सा नहीं रहता। हर परिवेश में संदेश अलग-अलग ढंग से संप्रेषित किया जाता है।

जीवन मूल्य और दृष्टिकोण

वक्ता के जीवन मूल्य और दृष्टिकोण का भी उसके विषय के चुनाव, शब्दों के चुनाव आदि पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार श्रोता के जीवन मूल्य और दृष्टिकोण का असर भी उसके संदेश को समझने और व्याख्यायित करने पर पड़ता है।

सफल संप्रेषण

अनेक बार ऐसा होता है कि हम जो कहना चाहते हैं, उसके लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिल पाते और हमारी बात दूसरे तक ठीक ढंग से नहीं पहुँच पाती। कई बार हम कहते कुछ हैं और सुनने वाला समझ कुछ और लेता है अर्थात् अनेक बार संप्रेषण पूरा नहीं हो पाता है। गलत शब्द का प्रयोग करने से भी कई बार मनमुटाव पैदा हो जाता है और झगड़े की नौबत तक आ जाती है।

संप्रेषण संपर्क का काम करता है। अतः संपर्क टूटने पर संप्रेषण अधूरा रह जाता है। सफल संप्रेषण में वक्ता द्वारा प्रेषित संवाद श्रोताओं तक पहुँचता है और वक्ता जो कुछ कहना चाहता है, श्रोता उसे उसी रूप में ग्रहण करता है। सफल संप्रेषण में बाधा अनेक कारणों से आती है। आइए, उन पर चर्चा करें।

सफल संप्रेषण के अवरोध

गलत संदेश—संदेश को सही ढंग से संप्रेषित न करना और उसे ठीक ढंग से समझ न पाना सफल संप्रेषण में प्रमुख अवरोध है। अगर संदर्भ स्पष्ट न हो और उपयुक्त शब्द का प्रयोग न किया जाए, तो संप्रेषण सफल नहीं हो पाता। अतः सफल संप्रेषण के लिए संदर्भ और भाषा स्पष्ट होने के साथ शब्दों का चयन भी सोच-समझकर करना चाहिए।

गलत शब्दों का चुनाव—एक भी गलत शब्द आपके संप्रेषण को तो बाधित कर ही सकता है और इससे प्रेषक के संबंधों में दरार आ सकती है, बना-बनाया काम बिगड़ सकता है अथवा स्थिति हास्यास्पद भी हो सकती है।

4 / NEERAJ : हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल

सुनना और समझना—श्रोता वक्ता अथवा प्रेषक की बात ध्यान से नहीं सुनने पर भी अथवा लिखित सन्देश को ध्यान से न पढ़ने पर भी सन्देश का सम्प्रेषण अधूरा रह सकता है। श्रोता द्वारा संदेश को ठीक से नहीं सुनने पर भी संप्रेषण बाधित होता है। फोन पर बातचीत करते हुए बोलने वाले की आवाज सुनाई नहीं देने से भी संप्रेषण पूरा नहीं हो पाता। टेलीफोन से आवाज धीमी आना, टेलीफोन लाइन में शोर या खड़खड़ाहट, कुछ भी कारण हो सकता है।

भाव-भंगिमा—यह संप्रेषण का एक माध्यम भी है और बाधा भी। मुसकराना, क्रोध से देखना, मुँह बिचकाना, व्यंग्य से हँसना, कंधे उचकाना आदि भाव-भंगिमाएँ भी प्रेषक के सन्देश को प्राप्तकर्ता तक पहुंचा देती हैं, परंतु इस प्रकार के संप्रेषण में संप्रेषित भाव का गलत अर्थ लगाना भी संभव है। इस कारण संप्रेषण में हाव-भाव की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस प्रकार के संप्रेषण में स्थानीय विभिन्नता भी होती है। इससे भी सम्प्रेषण बाधित हो सकता है।

बोलने का ढंग—बोलने के ढंग से भी संप्रेषण प्रभावित होता है। ऊँची आवाज में या चिल्लाकर बोलने से सही संदेश के गलत संप्रेषण की संभावना बढ़ जाती है। भारी या कर्कश आवाज से भी संप्रेषण बाधित हो सकता है।

भाषा ज्ञान—सफल संप्रेषण के लिए वक्ता और श्रोता की भाषा एक होना या एक दूसरे की भाषा जानना भी महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन से कथन गलत हैं और कौन-से सही हैं? सही कथन के आगे (✓) का और गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए।

- (क) संप्रेषण केवल भाषा के माध्यम से हो सकता है।
- (ख) संप्रेषण संवाद है।
- (ग) संप्रेषण में अर्थों का आदान-प्रदान होता है।
- (घ) संप्रेषण मानवीय कार्यकलाप होने के साथ-साथ एक प्रक्रिया भी है।

उत्तर—(क) (×) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓)

प्रश्न 2. मौखिक संप्रेषण की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—मौखिक संप्रेषण की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **अधिक प्रभावशाली**—मौखिक संप्रेषण अधिक प्रभावशाली होता है, क्योंकि मौखिक संदेश श्रोता पर तत्काल प्रभाव डालता है।

2. **सन्देश का निवारण**—मौखिक संप्रेषण का यह गुण है कि सन्देश के बारे में सन्देश प्राप्तक को यदि कोई सन्देश हो तो उसको तुरन्त ही दूर किया जा सकता है।

3. **प्रतिक्रिया का ज्ञान**—सन्देश देने पर प्रेषक प्राप्तक की प्रतिक्रिया को तत्काल जान सकता है। संप्रेषण का वास्तव में उद्देश्य ही यही होता है कि न केवल संदेश भेज दिया जाये, अपितु सन्देश प्राप्तक की प्रतिक्रिया भी जान ली जाए कि उस पर संदेश का वांछित प्रभाव हुआ है या नहीं।

4. **शीघ्रता**—सन्देश शीघ्रता से प्रेषित हो जाता है तथा उसका क्रियान्वयन भी तुरन्त हो जाता है।

5. **लोचदार**—मौखिक संप्रेषण लोचदार होता है, क्योंकि परस्पर विचार-विनिमय के आधार पर इसमें तुरन्त सुधार किया जा सकता है।

6. **व्यक्तिगत संपर्क**—मौखिक संप्रेषण में प्रेषक तथा प्राप्तक में आमने-सामने व्यक्तिगत संपर्क स्थापित होता है, जिससे पारस्परिक सद्भावना एवं प्रेम में वृद्धि होती है।

प्रश्न 3. आंगिक संप्रेषण के तीन प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—आंगिक संप्रेषण के निम्नलिखित प्रकार हैं—

1. **शारीरिक मुद्रा**—शारीरिक मुद्रा का प्रयोग एक प्रतिभागी की तल्लीनता या संलिप्तता की मात्रा के निर्धारण, संप्रेषकों की स्थितियों के मध्य अंतर, अन्य संप्रेषक के प्रति एक व्यक्ति के मन में स्नेह के निर्धारण हेतु किया जा सकता है। अंतर्वैयक्तिक संबंधों पर शारीरिक मुद्रा के प्रभाव के बारे में किये गये अध्ययन यह बताते हैं कि दर्पण छवि मुद्रा के समरूप होती है, जहाँ एक व्यक्ति का बायाँ भाग अन्य व्यक्ति का दायाँ होता है, जिससे संप्रेषक एवं सकारात्मक वाणी की अनुकूल अनुभूति होती है; एक व्यक्ति जो आगे की ओर झुकाव एवं पीछे की ओर झुकाव में कमी दर्शाता है, संप्रेषण के दौरान सकारात्मक भावनायें सूचित करता है। मुद्रायें इन सूचकों द्वारा समझी जाती हैं—झुकाव की दिशा, शरीर उन्मुखीकरण, बांहों की स्थिति एवं शरीर का खुलापन।

2. **हाव-भाव**—हाव-भाव से तात्पर्य गैरमौखिक शारीरिक संचलन से है जो कि अर्थ को अभिव्यक्त करता है। ये हाथ, भुजाओं या शरीर से जुड़े हो सकते हैं एवं इनमें सिर, चेहरा तथा आँखों के संचलन भी शामिल होते हैं, जैसे कि आँख मिचकाना, झपकाना एवं गोल करना। भाषा एवं हावभाव या शाब्दिक तथा अशाब्दिक संप्रेषण के मध्य की सीमा को चिह्नित करना कठिन हो सकता है।

यद्यपि हावभाव का अध्ययन अभी प्रारंभिक अवस्था में है, अनुसंधानकर्ताओं ने हावभावों की कुछ विस्तृत श्रेणियाँ चिह्नित की हैं। सर्वाधिक सुपरिचित तथा कथित प्रतीकात्मक या उद्धरण योग्य हावभाव हैं। ये परंपरागत एवं संस्कृति विशिष्ट हावभाव हैं, जिनका प्रयोग शब्दों के स्थान पर किया जा सकता है जैसे कि 'हलो' एवं 'गुडबाय' के स्थान पर हाथ को हिलाना। एक अकेला प्रतीकात्मक हावभाव के विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में प्रशंसा सूचक से लेकर अपमानजनक तक विभिन्न महत्व का हो सकता है।

हाव-भावों की अन्य विस्तृत श्रेणी में वे हावभाव शामिल हैं, जो हमारी बातचीत के दौरान सहसा प्रयोग होते हैं। ये हाव-भाव, वाणी के साथ नजदीकी समन्वय रखते हैं। हाव-भाव का प्रयोग वाणी के साथ किया जाता है एवं निश्चित शब्दों एवं मुहावरों पर जोर देने के लिये वाणी की गति के साथ समय बचाता है। इस तरह के हाव-भाव वाणी और चिंतन प्रक्रिया के साथ अभिन्न रूप से संबद्ध होते हैं। सहसा हाव-भाव का प्रयोग तब होता है, जब हम ज्यादा सारगर्भित बोलते हैं एवं यह साथ में ध्वनित होने वाली वाणी के अर्थ को ध्वनित या विस्तृत कर सकता है। उदाहरण के लिये, ऐसा हाव-भाव जो फेंकने के कार्य को चित्रित करता है, बोलचाल के साथ ही घटित हो सकता है—'उसने गेंद को सीधे खिड़की पर फेंका।'